September 2024

Monthly Magazine
Year 10 Issue 9

Satyug

नारायण रेकी सतसंग परिवार

In Giving We Believe

सत्युग

हमारा उद्देश्य

"हर इंसान तन, मन, धन व संबंधों से स्वस्थ हो
हर घर में सुख, शांति समृद्धि हो व
हर व्यक्ति उन्नति, प्रगति व सफलता प्राप्त करे।"

वुधवार सतसंग

प्रत्येक वुधवार प्रात ११ वजे से ११.३० वजे तक

फेसवुक लाइव पर

सतसंग में भाग लेने के लिए नारायण रेकी सतसंग परिवार के फेसवुक पेज को ज्वाइन करें और सतसंग का आनंद लें ।

नारायण गीत

नारायण-नारायण का उद्घोष जहाँ
राम राम मधुर धुन वहाँ
सबको खुशियाँ देता अपरम्पार,
जीवन में लाता सबके जो बहार
खोले, उन्नति, प्रगति, सफलता के द्वार,
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
हमारा एन.आर.एस.पी., प्यारा एन.आर.एस.पी.
प्यार, आदर, विश्वास बढ़ाता
रिश्तों को मजबूत बनाता, मजबूत बनाता
परोपकार का भाव जगाता
सच्चाई, नम्रता सेवा में विश्वास बढ़ाता
सत को करता अंगीकार
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
मुस्कान के राज बताता,
तन, मन, धन से देना सिखलाता
हमको जीना सिखलाता
घर-घर प्रेम के दीप जलाता
मन क्रम से जो हम देते वही लौटकर आता, वही लौटकर आता
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
एन.आर.एस.पी.,एन.आर.एस.पी.

।। 卐 ।।

पावन वाणी

प्रिय नारायण प्रेमियों,

।। नारायण नारायण ।।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,विश्वास रजत नग पग तल में,
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो,जीवन के सुंदर समतल में।।

यह पंक्तियाँ बहुत ही सुंदर शब्दों में, इस सृष्टि की रचना में स्त्रियों की भूमिका को दर्शाती हैं।

जीवन का हर पल हर क्षण स्त्रियों की ममता, करुणा, सहनशीलता और शक्ति का प्रतीक है। स्त्री जननी है, पालक है, लक्ष्मी है,उन्नति है, प्रगति है। संसार का ऐसा कोई कार्य नहीं है जो स्त्री न कर सकती हो। हर क्षेत्र में स्त्री अपनी भूमिका बहुत ही शानदार, जानदार तरीक़े से निभा रही है। बस ज़रूरत है तो अपने भीतर की क्षमताओं को पहचानने की और आवश्यकता पड़ने पर उनका समुचित उपयोग करने की।

मुसहर समुदाय से आने वाली रीता कौशिक ने कभी नहीं सोचा था कि वह अपने परिवार में औपचारिक शिक्षा ग्रहण करने वाली पहली महिला बन जाएंगी और हाशिए पर रहने वाले, गरीबी और भुखमरी झेलने को अभिशप्त समाज को अपने दम पर नई राह दिखा सकेंगी। आज वह अपनी संस्था के ज़रिये मुसहर समाज की शिक्षा और जागरूकता के लिए काम कर रही हैं। उनकी संस्था की पहुंच ११२ ग्राम पंचायतों तक है। सरकारी और निजी संगठनों के साथ मिलकर वह देश ही नहीं, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करने वाली संस्थाओं के साथ भी काम कर रही हैं। वह २५ हज़ार से अधिक बच्चों के जीवन में शिक्षा की अलख जगा रही हैं। उनकी कहानी २३ साल पुरानी है। संघर्ष और तमाम ज़िल्लतों को सहते हुए बड़ी हुई हैं रीता। घर पर छोटे भाई-बहनों की संरक्षिका रहने वाली बच्ची की पढ़ने की इच्छा तब बाहर आई, जब वह रोज़ाना भाई के स्कूल के बाहर उसका इंतज़ार करते थक जाती थी। फिर उसने उसी स्कूल के शिक्षक से पिछली बेंच पर बैठने और अपने लिए एक स्लेट देने की गुहार लगाई। बात बन गई और वह भी पढ़ने लगी। स्कूल की हर परीक्षा में अव्वल रही। हालांकि दलित होने के कारण उन्हें भेदभाव भी खूब झेलना पड़ा, लेकिन वह हार कहां मानने वाली थीं। रिक्शा चालक दलित पिता को अचानक बच्ची की शादी की चिंता सताने लगी और एक दिन रीता को न चाहते हुए बाल विवाह के लिए हामी भरनी पड़ी, पर विदाई के अगले ही दिन वह मायके वापस आ गईं। मन में पढ़ने का जुनून लिए वह जीवन में कुछ करना चाहती थीं। अपनी इच्छा को पिता से साझा किया। पिता को उनकी अदम्य इच्छा के आगे झुकना पड़ा, पर कुछ ही समय बाद पैसे की कमी दीवार बनकर खड़ी हो गई। रीता ने इस चुनौती का भी बखूबी सामना किया। खुद को इस काबिल बनाया जिससे कि छोटी नौकरी भी मिल जाए ताकि मिलने वाले पैसे से पढ़ाई जारी रहे। उन्होंने बीएससी किया और जीवन की बागडोर अपने हाथ में थाम ली। आगे चलकर पुनर्विवाह किया। अपने जीवनसाथी के साथ मिलकर आज वह दलित समाज और अपने समुदाय के विकास के लिए कई काम कर रही हैं। उनके अधिकारों के लिए उन्हें सजग करते हुए बता रही हैं कि जीवन में वास्तविक उजाला तभी आता है जब शिक्षा की रोशनी जलाई जाए। रीता के कारण आज न केवल उनके समुदाय की परेशानियां कम हो रही हैं, बल्कि बाल विवाह जैसी कुरीतियों के ख़िलाफ़ उस समाज की बच्चियां भी आवाज़ उठाने का साहस कर पा रही हैं।

हमें अपने भीतर की शक्तियों को पहचानना है और आवश्यकता होने पर उनका उपयोग कर के अपने जीवन की सार्थकता को साबित करना है।

शेष कुशल -

R. Modi

-: संपादिका :-

संध्या गुप्ता

09820122502

–: प्रधान कार्यालय :–

नारायण भवन

टोपीवाला कंपाउंड, स्टेशन रोड़, गोरेगांव (प.), मुंबई

–: क्षेत्रीय कार्यालय :–

अहमदाबाद	जैविनी शाह	9712945552
अकोला	शोभा अग्रवाल	9423102461
अकोला	रिया अग्रवाल	9075322783
अमरावती	तरुलता अग्रवाल	9422855590
औरंगाबाद	माधुरी धानुका	7040666999
बैंगलोर	कनिष्का पोद्दार	7045724921
बैंगलोर	शुभांगीं अग्रवाल	9327784837
बैंगलोर	शुभांगी अग्रवाल	9341402211
बस्ती	पूनम गाड़िया	9839582411
बिहार	पूनम दूधानी	9431160611
भीलवाड़ा	रेखा चौधरी	8947036241
भोपाल	रेनू गट्टानी	9826377979
चेन्नई	निर्मला चौधरी	9380111170
दिल्ली (नोएडा)	तरुण चण्डक	9560338327
दिल्ली (नोएडा)	मेघा गुप्ता	9968696600
दिल्ली (डब्ल्यू)	रेनु विज	9899277422
धुलिया	रेणु भटवाल	878571680
गोंदिया	पूजा अग्रवाल	9326811588
गोहटी	सरला लाहोटी	9435042637
हैदराबाद	स्नेहलता केडिया	9247819681
इंदौर	धनश्री शिरालकर	9324799502
जालना	रजनी अग्रवाल	8888882666
जलगांव	काला अग्रवाल	9325038277
जयपुर	प्रीति शर्मा	9461046537
जयपुर	सुनीता शर्मा	8949357310
झुनझुनू	पुष्पा देवी टिबेरेवाल	9694966254
इचलकरंजी	जय प्रकाश गोयनका	9422043578
कोल्हापुर	राधिका कुमटेकर	9518980632
कोलकत्ता	स्वेटा केडिया	9831543533
कानपुर	नीलम अग्रवाल	9956359597
लातूर	ज्योति भूतड़ा	9657656991
मालेगांव	रेखा गारोडिया	9595659042
मालेगांव	आरती चौधरी	9673519641
मोरबी	कल्पना चोरौड़िया	8469927279
नागपुर	सुधा अग्रवाल	9373101818
नांदेड़	चंदा काबरा	9422415436
नवलगढ़	ममता सिंग्रोडिया	9460844144
नासिक	सुनीता अग्रवाल	9892344435
पुणे	आभा चौधरी	9373161261
पटना	अरबिंद कुमार	9422126725
पुरुलिया	मृदु राठी	9434012619
परतवाड़ा	राखी मनीष अग्रवाल	9763263911
रायपुर	अदिति अग्रवाल	7898588999
रांची	आनंद चौधरी	9431115477
सूरत	रंजना अग्रवाल	9328199171
सांगली	हेमा मंत्री	9403571677
सिकर (राजस्थान)	सुषमा अग्रवाल	9320066700
श्री गंगानगर	मधु त्रिवेदी	9468881560
सतारा	नीलम कदम	9923557133
शोलापुर	सुवर्णा बलदवा	9561414443
सिलीगुड़ी	आकांक्षा मुधरा	9564025556
टाटा नगर	उमा अग्रवाल	9642556770
राउरकेला	उमा अग्रवाल	9776890000
उदयपुर	गुणवंती गोयल	9223563020
उबली	पल्लवी मलानी	9901382572
वाराणसी	अनीता भालोटिया	9918388543
विजयवाड़ा	किरण झँवर	9703933740
वर्धा	रूपा सिंघानिया	9833538222
विशाखापतनम	मंजू गुप्ता	9848936660
गुडगाँव	मेघा गुप्ता	9968696600
यवतमाल	वंदना सूचक	932521889

अंतर्राष्ट्रीय केंद्र का नाम

ऑस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
दुबई	विमला पोद्दार	+971528371106
काठमांडू	रिचा केडिया	+977985-1132261
सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
शारजाह	शिल्पा मंजरे	+971501752655
बैंकॉक	गायत्री अग्रवाल	66952479920
विराटनगर	मंजू अग्रवाल	+977980-2792005
विराटनगर	वंदना गोयल	+977984-2377821

। । 卐 । ।

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

।।नारायण नारायण।।

पिछले दिनों, पेप्सी की सी ई ओ इंद्रा नूई का एक इंटरव्यू सुना जिसमें उन्होंने कहा, 'मेरी माँ ने मुझे सिखाया है तुम जहां भी रहो, अपनी भूमिका सर्वोत्तम तरीक़े से निभाओ पर हमेशा याद रखो तुम्हारी सर्वोत्तम भूमिका एक स्त्री की है जिसे तुम्हें बेहतरीन तरीक़े से निभाना है।' अपनी माँ की यह सीख मैंने हमेशा याद रखी है। घर के बाहर मेरी भूमिका कुछ भी रही हो, पर घर में घुसते ही मैं एक पत्नी, बहू और एक माँ बन जाती हूँ और अपनी भूमिका निभाती हूँ। परिणाम-घर के बाहर भी मेरा परफ़ॉर्मेंस हमेशा बेहतरीन रहा है। जब-जब घर के बाहर टूटी हूँ मेरे परिवार ने मुझे सम्भाला है । मैं उस परमात्मा का धन्यवाद करती हूँ जिसने मुझे स्त्री के रूप में इतने सारे रोल निभाने के लिए परिवार जैसा सपोर्ट सिस्टम दिया है। आई एम सो ब्लेस्ड।

जब मैंने यह सुना तो मुझे लगा ईश्वर की समस्त कृतियों में से सबसे ज़्यादा चुनौतियाँ भरा किरदार है स्त्रियों का। बस टीम सतयुग ने तय किया कि इस बार के अंक में स्त्रियों की विभिन्न भूमिकाओं के बारे में बातचीत की जाये।

मेरी प्यारी सहेलियों, आप अपनी भूमिका बेहतरीन तरीक़े से निभाती रहें, इन शुभकामनाओं के साथ -

आपकी अपनी

संध्या गुप्ता

अंतरर्राष्ट्रीय कार्यालय :

नेपाल	रिचा केडिया	977985-1132261
आस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
बैंकाक	गायत्री अग्रवाल	66897604198
कनाडा	पूजा आनंद	14168547020
दुबई	विमला पोद्दार	971528371106
शारजहा	शिल्पा मांजरे	971501752655
जकार्ता	अपेक्षा जोगनी	9324889800
लन्दन	सी.ए. अक्षता अग्रवाल	447828015548
सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
डबलिनओहियो अमेरिका	स्नेह नारायण अग्रवाल	1-614-787-3341

अमेरिका

सिंसिनाती	मेघा अग्रवाल	+1(516)312-4189
कनेक्टिकट	ऊष्मा जोशी	
फ्लोरिडा	बीना पटेल	+1(904)343-9056
शिकागो	चाँदनी ठक्कर	+12247700252
केलिफ़ोर्निया	सुशीला तयाल	+12247700252
न्यू जर्सी	शैली अग्रवाल	+912012842586

we are on net

narayanreikisatsangparivar @narayanreiki

प्रकाशक : नारायण रेकी सतसंग परिवार

मुद्रक : श्रीरंग प्रिन्टर्स प्रा. लि. मुंबई.

Call : 022-67847777

सतयुग का शंखनाद

जब उस परम शक्ति ने सृष्टि की रचना की तो शायद उसे भी पता था कि उसकी रचनाओं में स्त्री ही एक मात्र ऐसी रचना है जो अनेकों भूमिकाओं को निभाते हुए इस मानव जाति को विकसित कर सकती है और उसे उन्नति, प्रगति, सफलता के मार्ग पर आगे ले जा सकती है । ईश्वर ने उसे ममता दी ताकि वो संतति को जन्म दे सके, स्नेह और दुलार दिया ताकि वो कण-कण को प्यार से भर सके । सहनशक्ति दी ताकि वो गंभीर से गंभीर परिस्थितियों का सामना भी धैर्य से कर सके । कार्य निष्पादन की असीमित क्षमता दी ताकि वो असंभव से असंभव लगने वाले कार्यों को भी कर सके । रूप सौंदर्य दिया ताकि वो इठला सके, ज्ञान दिया, बुद्धि दी ताकि वो विवेकपूर्वक अपनी भूमिका निभा सके ।

प्रभु की इस रचना ने जब जन्म लिया और अपने कार्यों का निष्पादन किया तो स्त्री रूपी यह रचना उस परम शक्ति की अपेक्षा से कहीं ज़्यादा बेहतर निकली तो ईश्वर ने उसे शक्ति स्वरूपा के रूप में अधिष्ठापित किया । हमारे शास्त्रों में महिलाओं को आध्यात्मिकता का प्रतीक माना गया है। स्त्री ने अपनी भूमिका हर क्षेत्र में बहुत ही अच्छे तरीक़े से निभाई और अपने अस्तित्व को स्वतः एक स्थान दिलाया हैं । प्राचीन काल से लेकर आज तक जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं हैं जहां मौक़ा मिलने पर महिलाओं ने कदम पीछे हटाए हों। स्त्रियाँ हर क्षेत्र में अपनी भूमिका बखूबी से निभाने में सक्षम रही हैं ।

सच कहें तो महिलाएं समाज की आधारशिला होती हैं और उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। समय के साथ उनकी भागीदारी और योगदान में वृद्धि हुई है, और आज वे हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं।आप किसी देश की स्थिति का अंदाज़ा वहाँ रहने वाली महिलाओं की स्थिति देखकर लगा सकते हैं।

जवाहरलाल नेहरू द्वारा महिलाओं पर कही गई एक प्रसिद्ध उक्ति है । महिलाओं की स्थिति किसी राष्ट्र में सामाजिक, आर्थिक और मानसिक स्थिति को दर्शाती है।

प्राचीन भारतीय सभ्यता में महिलाओं को अधिकार और समानता प्राप्त थी पर मध्यकाल में जब विदेशियों ने भारत पर आक्रमण किया तो स्त्रियों के साथ बुरा और असमान व्यवहार किया गया। दहेज , सती प्रथा, बाल विवाह और कन्या भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक बुराइयाँ इस युग में व्यापक रूप से प्रचलित थीं। महिलाओं में शिक्षा और आत्म-चेतना के प्रसार ने समय के साथ उनकी प्रगति को बढ़ावा दिया है। आज की महिलाएँ सशक्त हैं। साथ ही, महिलाएँ हर क्षेत्र में उन्नति और सफलता प्राप्त कर रही हैं। सच्ची महिला स्वतंत्रता तभी प्राप्त हो सकती है जब लोग महिलाओं के प्रति अपने प्रतिबंधात्मक दृष्टिकोण और मानसिकता को बदल दें।

एक स्त्री के बिना परिवार की कल्पना भी नहीं की जा सकती । स्त्री संतति को जन्म देती है उसे पालती पोसती है। समाज में स्व अस्तित्व को बनाये रख आगे बढ़ने के लायक़ बनाती है और यह समाज उन्नति, प्रगति, सफलता के सोपानों को छूता है।

महिलाओं की भूमिका शिक्षा क्षेत्र में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। एक शिक्षित महिला न केवल अपने परिवार को सशक्त बनाती है, बल्कि समाज और देश की प्रगति में भी योगदान देती है। पहले महिलाएं शिक्षा से वंचित रहती थीं, लेकिन आज महिलाएं शिक्षक, प्रोफेसर, वैज्ञानिक, और विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों की प्रमुख के रूप में काम कर रही हैं। शिक्षा में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी समाज के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

वर्तमान समय में महिलाएं आर्थिक क्षेत्र में भी सक्रिय रूप से योगदान दे रही हैं। महिलाएं उद्यमिता, व्यापार, बैंकिंग, वित्त, और विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रही हैं। महिला उद्यमियों का उदय न केवल आर्थिक विकास को प्रोत्साहन दे रहा है, बल्कि वे रोज़गार के नए अवसर भी प्रदान कर रही हैं। कई सफल महिलाएं आज बड़े कॉर्पोरेट संस्थानों की सीईओ और निदेशक हैं, जो यह दर्शाता है कि महिलाएं किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से कम नहीं हैं।

राजनीति में महिलाओं की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। आज महिलाएं प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, सांसद, विधायक और विभिन्न राजनीतिक दलों की प्रमुख बनकर समाज और देश के विकास में अहम योगदान दे रही हैं। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में महिलाओं को सत्ता में उचित प्रतिनिधित्व मिलना आवश्यक है। पंचायतों में ३३प्रतिशथ आरक्षण से महिलाओं ने निचले स्तर की राजनीति में भी अपनी पकड़ बनाई है, जो सामाजिक सशक्तिकरण का प्रतीक है।

महिलाएं स्वास्थ्य और चिकित्सा क्षेत्र में भी अग्रणी हैं। डॉक्टर, नर्स, चिकित्सा अनुसंधानकर्ता, और स्वास्थ्य सेवा प्रदाता के रूप में महिलाएं समाज के स्वास्थ्य और कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। महामारी जैसी आपातकालीन परिस्थितियों में, महिला स्वास्थ्यकर्मियों ने अग्रिम पंक्ति में रहकर सेवा प्रदान की है, जो उनके समर्पण और सेवा भावना को दर्शाता है।

महिलाएं सामाजिक सेवा और परोपकार के कार्यों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। बालिका शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, गरीबी उन्मूलन, और पर्यावरण संरक्षण जैसे क्षेत्रों में महिलाएं अग्रणी हैं। कई सामाजिक संगठन और एनजीओ महिला नेतृत्व में संचालित हो रहे हैं, जो समाज के कमजोर वर्गों के लिए काम कर रहे हैं। महिलाओं का यह योगदान समाज को न्याय और समता की दिशा में ले जाने में सहायक है।

महिलाओं ने संस्कृति और कला के क्षेत्र में भी अपनी गहरी छाप छोड़ी है। संगीत, नृत्य, चित्रकला, साहित्य और सिनेमा में महिलाओं का योगदान बेमिसाल है। भारतीय इतिहास में कई प्रसिद्ध महिला कलाकारों, लेखिकाओं और संगीतकारों ने देश की सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध किया है। वे अपनी कला के माध्यम से समाज में परिवर्तन और जागरुकता फैलाने का काम कर रही हैं।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी महिलाएं अपनी योग्यता साबित कर रही हैं। महिला वैज्ञानिक और इंजीनियर अंतरिक्ष अनुसंधान, चिकित्सा अनुसंधान, और आईटी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण आविष्कार और खोज कर रही हैं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) और अन्य प्रमुख वैज्ञानिक संस्थानों में महिलाओं की भूमिका प्रशंसनीय है।

समाज के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका न केवल महत्वपूर्ण है, बल्कि उनके बिना समाज की प्रगति अधूरी है। महिलाएं अपने संघर्ष, मेहनत और दृढ़ संकल्प के बल पर समाज में अपनी अलग पहचान बना रही हैं। यह ज़रूरी है कि उन्हें समान अवसर और समर्थन मिले ताकि वे सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ सकें और समाज के निर्माण में सक्रिय रूप से भागीदारी कर सकें। महिलाओं का सशक्तिकरण न केवल महिलाओं के लिए, बल्कि पूरे समाज के लिए लाभकारी है।

ज्ञान मँजूषा

इस स्तंभ में हम प्रश्नोत्तर के माध्यम से दीदी द्वारा कुछ महत्वपूर्ण सूत्रों की जानकारी पाठकों को देते हैं जो बहुत ही सरल माध्यमों से जीवन की जटिल समस्याओं को सुलझा लेते हैं। पेश हैं ऐसे ही कुछ प्रश्नोत्तर -

इन्सान अपने गुस्से पर, अपनी जेलेसी पर काबू कैसे करें ? क्योंकि उस moment में हम ऐसी कुछ चीज़ें कह जाते हैं जिसके बारे में हम खुद ही बाद में regret करते हैं। पर उस पर कंट्रोल कैसे करें ?

राज दीदी: पहली बात तो यह है कि यदि आपको यह पता चल जाए कि जो मैं मुख से बोल रहा हूँ, ईर्ष्या वश बोल रहा हूँ, क्रोध में बोल रहा हूँ, मज़ाक में बोल रहा हूँ, ये चीज़ें मेरे पास ही वापस आने वाली हैं। आप उनको नहीं दे रहे हो, आप अपने खाते में ही डिपाजिट कर रहे हो। जब आप इतना जागृत हो जाएंगे, तो जो शब्द नहीं उच्चारित करने हैं, वो शब्द आपके मुख से उच्चारित नहीं होंगे।

दूसरी अवैरनेस, अभी जब आप मेरे वीडियोज वगैरह देखेंगे तो आप समझ जाएंगे हम शब्दों पर कितना फोकस करते हैं।

अपनी बातचीत के दौरान आप समझ जाएंगे और डेफिनेटली आप भी शब्दों के प्रति जागृत हो जाएंगे।

आप चेक कीजिएगा निगेटिव बोलने के बाद हम अक्सर पछताते हैं। २ महीने बाद, ३ महीने बाद हमको लगता है कि हमें ऐसा नहीं बोलना चाहिए था, पर उस वक्त मेरे मुंह से निकल गया। कुछ चीज़ें हमको पता होती हैं कि इन चीज़ों पर मैं रिएक्ट कर देता हूँ, चाहे आप वर्क प्लेस पे हो, चाहे आप घर में हों, सर्टन सिचुएशंस आपको पता है आपके रिएक्शन का कारण बनती हैं, तो उसमें से आपको बाहर निकलना है। रिएक्ट आप हमेशा करते हैं और हमेशा उसके बाद regret करते हैं, पछताते हैं कि मुझे ऐसा नहीं बोलना चाहिए था। ऐसा एक बार नहीं होता है, वो वापस वापस cycle चलता ही रहता है। रात को सोने के पहले आपको उस सिचुएशन को विजुलाइज करना है कि suppose आपको आपकी टेबल सिस्टेमेटिक चाहिए, ऑफिस में जब आप इंटरव्यू लेते हैं, पॉडकास्ट करते हैं उसमें आपकी सब चीज़ें व्यवस्थित होनी चाहिए और आपके साथ जो काम कर रहे हैं उसको बता दिया। सामान यहाँ रखना है, वहां रखना है, उसके बावजूद भी आगे पीछे सामान रखा जाता है और आप फिर अशांत हो जाते हैं कि मैंने इतनी बार बोला इसके बाद भी तुमको समझ में नहीं आया। रात को सोने के पहले आपको आँखें बंद करके उस सिचुएशन को देखना है कि सामान यहां से वहां रख दिया गया और जो मैंने बोला वह मुझे नहीं बोलना चाहिए था। अगली बार से आपको अपने brain को instructions देना है कि यदि ऐसी सिचुएशन फिर से आई तो भी मैं शांत रहूँगा। आपने ५-७ बार बोला, आपने सिचुएशन देखी और अपने आपको निर्देश दिया कि दोबारा भी यह सीन मुझे ऑफिस में दिखाई दिया तो मैं शांत रहूंगा, ' मैं रेस्पोंड करूँगा रियेक्ट नहीं करूँगा।' आपने जब यह इंस्ट्रक्शन अपने आपको दे दिया और नेक्स्ट टाइम वापस यह पोजीशन आयी तो बोलते–बोलते आप रुक जाओगे। बात आपके कंठ तक आएगी पर मुंह से बात नहीं निकलेगी। आप मुझे सपने में भी बोलेंगे ना तो भी गलत शब्द हमारे मुंह से उच्चारित नहीं हो पाएगा, सपने में हमें एवैरनैस नहीं होती है।

आपने विजुलाइज कर लिया है इसलिए आप इतने पॉजिटिव शब्दों का इस्तेमाल करते हैं।

राज दीदी ने कहा मैं विजुलाइजेशन का नहीं बोलूंगी लेकिन मुझे शब्दों की ताकत समझ में आ गई है। शब्दों का महत्व बोल लीजिए, ताकत बोल लीजिए, सामर्थ्य बोल लीजिए। कई बार हमें ऑडियंस को बताने के लिए कुछ शब्दों का इस्तेमाल करना पड़ता है क्योंकि आम जनता नहीं समझ पाती है। तो उसके आगे पीछे कई बार हम लोग 'नारायण-नारायण' शब्द बोलते हैं, नारायण नारायण उच्चारण करते हैं। किसी को कुछ समझाने के लिए यदि निगेटिव शब्द हमारे मुंह से निकले तो वह नेगेटिव शब्द फलित ना हो इसलिए हम नारायण नारायण बोल देते हैं, भगवान का उच्चारण कर लेते हैं ताकि वह शब्द nullify हो जाए।

जन्म कुंडली को मानना चाहिए कि नहीं मानना चाहिए और हमारे द्वारा किए गए कर्म हमारी जन्म कुंडली पर क्या असर करते हैं?

राज दीदी:- जन्म कुंडली को मानना या ना मानना यह आपकी पर्सनल च्वाइस है, यह आपके विश्वास और आपकी मान्यता पर निर्भर करता है। हमारे कर्म हमारे जीवन पर किस तरह असर करते हैं, वो हम आपको सीधी सरल भाषा में बताते हैं ताकि आप आसानी से समझ पाएं। राज दीदी ने आगे कहा कि इस ब्रह्मांड में हम सबके नाम के अदृश्य ड्रम भरे हुए हैं, सबके नाम के ड्रम भरे हुए हैं, ये नीचे से खुले हैं और इस ब्रह्मांड में अदृश्य शक्तियां विचरण कर रही हैं।

ये शक्तियां असंख्य है, असंख्य जो अदृश्य है। यह अदृश्य शक्तियां जो विचरण कर रही है, इसका एहसास आपको भी कई बार हुआ होगा। चलते–चलते पैर फिसला पर मैं बच गई, पता नहीं किसने थाम लिया तो सुरक्षित रह गए। होता है ना..?

सीढ़ियाँ उतर रहे हैं, कहीं पर पैर अटका लेकिन गिरते गिरते बच गए और साथ में हमारे मुख से यह भी निकल जाता है कि पता नहीं किसने हाथ पकड़ लिया, समझ में ही नहीं आया। यह पता ही नहीं चलता कि किसने रक्षा की। एक्सीडेंट होते–होते बच गए, ये अदृश्य शक्ति है जो इस ब्रह्मांड में विचरण कर रही है और अपनी उपस्थिति का अहसास आपको बहुत बार करा देती है।

इनका काम क्या है? इन अदृश्य शक्तियों का मुख्य काम क्या है ?

राज दीदी :- इनका मुख्य काम यह है कि जब हम अच्छे कर्म करते हैं तो इनकी छटनी बहुत अक्टिव है। अच्छे कर्म की एवज में आपके खाते में अनाज भर दिया जाता है और जब आप गलत कर्म करते हैं तो उसकी एवज में कंकड़–पत्थर इसमें डाल दिये जाते हैं। यह इनका मेन काम है, बहुत एक्टिव होती है यह प्रक्रिया। आपने विचार – वाणी और व्यवहार के माध्यम से अच्छे कर्म किए, झट से आपके ड्रम में अनाज डाल दिया जाता है, गेहूं डाल दिया जाता है। गलत कर्म किए तो झट से कंकड़–पत्थर इसमें भर दिए गए।

अच्छे कर्मों की परिभाषा क्या है या अच्छे कर्म किसे कहते हैं?

राज दीदी:- सीधी सरल भाषा में आपके द्वारा किया गया वो कर्म जो दूसरों को सुख पहुंचाता है, खुशी देता है, शान्ति देता है, सांत्वना देता है, प्रेरणा देता है, प्रोत्साहन देता है, अच्छा महसूस करवाता है, यह सब अच्छे कर्मों की श्रेणी में आता है। उसकी एवज में ये अदृश्य शक्तियां झट से आपके खाते में ले जा के गेहूं, अनाज डाल देती हैं। नकारात्मक कर्म या ग़लत कर्म - आपके द्वारा किया गया वह कर्म जो दूसरों को दुःख देता है उसकी एवज में यह अदृश्य शक्तियां आपके ड्रम में कंकड़–पत्थर भर देती हैं।

आप जब अच्छे कर्म करते हैं और जो गेहूं आपके खाते में गया है, उसका फल जो मिलता है वह पूरे पैकेज डील के साथ आता है – सुख, शांति, सेहत, समृद्धि, खुशी, आनंद, उत्साह, उन्नति, प्रगति, सफलता, Name, Fame, Money, Love, Respect, Faith, Care, अच्छी आदतें, अच्छा स्वभाव । आपके काम एकदम आसानी से, सरलता से होते चले जाते हैं। जो चीजें आपको चाहिए और वह भाग्य में नहीं है वह भी आसानी से आपको मिल जाती है। नकारात्मक कर्म करने से आपके ड्रम में जो कंकर – पत्थर भरे गए हैं, उसकी package deal में आता है – दुःख, दरिद्रता, अशांति, रोग, शोक, पतन, कष्ट, पीड़ा, तक़लीफ़ें ।

दीदी आप बहुत ज्यादा विनम्र हैं आपमें बहुत धैर्य भी है। रोज़ इतनी सारी माला जपना, उसके बाद लोगों की परेशानियां जानना, उन्हें उसका समाधान भी देना, आप बहुत ज़्यादा काम भी करते हैं। मैं अभी आपसे मिल रहा हूं मैं यह महसूस कर सकता हूं, कि आपकी एनर्जी बहुत ज्यादा शांत है, दयालुता से भरी है। यह एनर्जी आपने कैसे डेवलप की और लोग इस एनर्जी को कैसे डेवलप कर सकते हैं?

राज दीदी :- पेशेंस की बात आप कर रहे हैं, जितना आपको दिखाई देता है उससे थोड़ा कम ही है, घर में उतना नहीं रहता । बचपन में जिस वातावरण में हम पले – बढ़े, हमारे पास दूसरा ऑप्शन नहीं था। हम ज़िद नहीं करते थे, किस से करेंगे, किस बेस पर करेंगे? सीधी सरल भाषा में कहें तो हम दब कर चलते थे। मेरे पिताजी एकदम सीधे सरल, मेरे भाई बहुत strict हैं, ज़ोर से बोलना मेरे भाइयों को पसंद नहीं था। तेज बोलना, बाहर खड़े रहना, लड़कों से बातें करना यह भाइयों को पसंद नहीं था। बड़ा भाई तो ठीक है, रिस्पेक्ट के आधार पर लेकिन छोटे भाई की आंखों से भी हम डरते थे। वह ५ साल छोटा है मुझसे। आज भी हमारी हिम्मत नहीं है कि बड़े भाई के सामने हम ज़ोर से बोल सकें । यह हिम्मत हम में आज भी नहीं है। शुरू से उस माहौल में पले – बड़े, तो उससे स्वभाव में बहुत चीज़ें आती चली गई। मां नहीं थी, मेरी दादी ने पाला – पोसा, पर सपोर्टर हमारी चाची थी। मेरी चाची का मेरे जीवन पर बहुत बड़ा इंपैक्ट है। चाची हमेशा ही मुझे बोलती रहती थी कि ससुराल जाएगी तो ज़ोर से मत बोलना, कल को कोई ऐसा ना बोले कि मां नहीं थी तो किसी ने कोई संस्कार नहीं दिए। चाची के संस्कार बहुत स्ट्रांग होने चाहिए ताकि उन्हें लगे कि दादी और चाची ने बहुत अच्छे संस्कार दिए हैं। चाची का बारंबार, बारंबार प्रेम से समझाना कि कभी ऊंची आवाज़ में नहीं बोलना, बेटा ससुराल में तुम शांत रह के चलोगे और व्यवहार अच्छा रहेगा तो सब स्वीकार करेंगे। तुम्हारे पीहर में कोई इतना स्ट्रांग नहीं है कि किसी बात पर तुम अपनी आवाज़ तेज़ कर

सको। इस तरह से उनकी जो फीडिंग हमको मिली, हमारा जो फ्रेंड सर्कल था, हमारे ईद – गिर्द के सभी लोग बहुत अच्छे मिले। यह हम नारायण की कृपा ही कहेंगे कि शुरू से हमें सराउंडिंग्स बहुत अच्छी मिली, इसलिए अच्छी चीज़ें भीतर आती चली गई।

लोग मुझसे पूछते हैं कि इतनी बड़ी टीम आप कैसे तैयार कर लेते हो? कैसे लोगों से डील करते हो? लोग मुझे डील करते हैं, मुझे कुछ भी नहीं संभालना पड़ता। रियली पूछिए। आप किसी से भी पूछेंगे तो सच में मुझे कुछ भी नहीं संभालना पड़ता । अगर मुझसे पूछेंगे कि आपका यह vision था क्या, इतनी ऊंचाई पर जाना? मेरा कोई vision नहीं था। जीवन में चीज़ें अपने आप होती चली गई। मैं इतना ज़रूर बोलूंगी कि समय का मैंने हमेशा सदुपयोग किया, शब्दों को हमेशा सोच समझ कर उच्चारण किया। बहुत अधिक बोलना, फोन पर टाइम पास करना, टीवी देखना, दूसरों से गपशप करना यह सब हमने कभी नहीं किया। आज तो हम सत्संग में पूरे इन्वाल्व हो गए हैं। उठना, बैठना, खाना, पीना सब सतसंग ही है लेकिन हम उन दिनों की बात कर रहे हैं जब हम सत्संग में इतने इन्वॉल्व नहीं थे। तभी भी हमारा यह स्वभाव नहीं था कि किसी से गॉसिप कर रहे हैं, टीवी देख रहे हैं। अब हम जब ग्रंथों का अध्ययन कर रहे हैं तो पहली चीज़ तो ये समझ में आ रही है कि आप सामने वाले को विनम्रता से जीत सकते हो, ना कि क्रोध से। आप कितने ही बड़े लोगों को देख लीजिए, आपको सब विनम्र ही मिलेंगे। गांधीजी को ही ले लीजिए ये सारे के सारे विनम्र ही हैं ।

नारायण शास्त्र कहता है कि जब आप विनम्र होते हैं तो आप समृद्धि को अपने जीवन में आकर्षित करते हैं। समृद्धि यानी सिर्फ़ धन नहीं, चार चीज़ें काउंट होती है उसमें – आपका तन, आपका मन, आपका धन, आपके संबंध। आप जब polite होते हैं तो आपका तन स्वस्थ होता है क्योंकि आपकी एनर्जी आपके पास है, आप चिल्लाएंगे तो आपकी एनर्जी कहाँ गई? विनम्रता आपको बहुत सारी चीज़ें देती है – आपका मन शांत, धन की बरकत। आज जितने पोलाइट होंगे, विनम्र होंगे उतनी ही अच्छी चीज़ों को आप आकर्षक करते चले जाएंगे। आपने मुझे कहा कि आपने मेरे वीडियो देखे, तो यहां मैंने मुखौटा नहीं पहन रखा है, यह मेरी दिनचर्या में शामिल है।

युवा मंच

स्त्री पूजनीय है, स्त्री वंदनीय है- यही हमारे शास्त्र कहते हैं और यही हमारी संस्कृति कहती है।

स्त्री ही जन्मदात्री माँ के रूप में संसार से हमारा परिचय कराती है। अपने गर्भ में हमारा सृजन व पोषण करती है, अपना दूध पिला हमें पुष्ट करती है उंगली पकड़कर चलना सिखाती है, शिक्षक बन हमारा ज्ञानवर्धन करती है, और संपूर्ण जीवन हमारे शुभ मंगल व लंबी उम्र की सतत कामना करती है। एक बहन के रूप में आपकी प्रथम व अभिन्न मित्र है, एक पत्नी के रूप में बहुमुखी हो आपके जीवन को आनंद से भर देती है। दादी व नानी के रूप में अगाध प्रेम का सागर बन जाती है।

भारतीय संस्कृति में आश्रम व्यवस्था के तहत स्त्री व पुरुष दोनों ही अपने दायित्व भली भाँति निभाते हैं। पुरुष जीवन यापन के लिए अर्थ कमाने बाहर जाता है और स्त्री घर व बच्चों की ज़िम्मेदारी सम्भालती है ।

समय बदला, युग बदले व आक्रांताओं के चलते स्त्री की स्थिति दयनीय होती चली गई।

शक्ति की द्योतक स्त्री यूँ तो सब सह गई पर पर उसका अंतर्मन घायल होता चला गया। शतकों से सहती आ रही स्त्री का धैर्य जवाब देने लगा और ऐसा होते होते आज वह बाग़ी हो गई है।

इदार शिक्षा व आर्थिक स्वतंत्रता के चलते वह मनमानी करने लगी है। हालांकि यह सभी स्त्रियों पर लागू नहीं होता पर आजकल ऐसे कई उदाहरण सामने आने लगे हैं।

स्त्री का मूलभूत स्वभाव धैर्य व शालीनता है। उसका सेवाभाव, उसकी नम्रता, उसका घर को एकजुट रखना, पौष्टिक भोजन बना कर प्रेमपूर्वक अन्नपूर्णा का स्वरूप, सुगृहणी बन एक मकान को घर बनाना ही उसे पूर्ण स्त्री बनाता है।

अंततः यही कहेंगे कि अगर हर स्त्री अपनी सभी भूमिकाएँ बखूबी, पूरी ईमानदारी और शिद्दत से निभाये तो हर घर अपने आप में स्वर्ग बन जाये।

स्त्री तुम पूज्य हो, पूज्यता के योग्य बनो। सबकी देखा देखी ना बिगड़ो, अपने मन की सुनो।

आपके विचार सकारात्मक सोच पर आधारित आपके लेख, काव्य संग्रह आमंत्रित है - सतयुग को साकार करने के लिये/आपके विचार हमारे लिये मूल्यवान हैं । आप हमारी कोशिश को आगे बढ़ाने में हमारी मदद कर सकते है । अपने विचार उदगार, काव्य लेखन हमें पत्र द्वारा, ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं ।
हमारा ई-मेल है 2014satyug@gmail.com

बच्चों की फुलवारी

ब्रह्मांड के रचयिता भगवान शिव का अस्तित्व शक्ति के बिना अधूरा माना जाता है। शिव हैं तो शक्ति भी उनके साथ है। मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य बनाए रखने से ही ब्रह्मांड सुचारू रूप से चलता है। शिव शक्ति का प्रतीक शिवलिंग इसी का प्रतीक है। भगवान शिव को नर का प्रतीक कहा जाता है जबकि देवी शक्ति को प्रकृति का प्रतीक कहा जाता है। भगवान शिव बताते हैं कि अगर मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य नहीं है तो दुनिया के किसी भी काम का ठीक से पूरा होना असंभव है।

सतयुग के इस अंक में हम महिलाओं की भूमिका पर विस्तार से चर्चा कर रहे हैं। यह सदियों से सिद्ध है कि स्त्री के बिना पुरुष अधूरा है। परिवार और कामकाज से लेकर राजनीति तक, समाज के हर पहलू में महिलाओं की अहम भूमिका होती है। वे देखभाल करने वाली, मां, नेता, उद्यमी और कार्यकर्ता होती हैं। वे परिवार और समुदाय की आधारशिला होती हैं।

अर्धनारीश्वर के बारे में पुराण में एक सुंदर कहानी है। भृंगी नाम की एक शिवभक्त थी । वह भगवान शिव की प्रदक्षिणा करना चाहती थी । भगवान शिव ने कहा तुम्हें शक्ति की भी प्रदक्षिणा करना होगा ।भृंगी इसके लिए सहमत नहीं हुई। उसने शिव और शक्ति के बीच आने की कोशिश की। शिव ने शक्ति को अपनी गोद में रखा, भृंगी ने एक मधुमक्खी का रूप लेकर प्रदक्षिणा करने की कोशिश की। तब शिव ने शक्ति को अपने भीतर शामिल कर लिया और अर्धनारीश्वर बन गए, यह साबित करने के लिए कि पुरुष अपनी महिलाओं के बिना अधूरा है। महिलाएं बहुमुखी भूमिका निभाती हैं। वे बेटियां हैं, बहन हैं, मां हैं, पत्नी हैं, साथी हैं, विश्वासपात्र हैं, मार्गदर्शक हैं, नर्स हैं, देखभाल करने वाली हैं। महिलाएं बहुत लचीली होती हैं, शारीरिक रूप से उनमें शक्ति की कमी हो सकती है लेकिन महिलाओं में मानसिक शक्ति एक ऐसी चीज है जिसका अंदाजा भी नहीं लगाया जा सकता है। जन्म देना, पालन-पोषण करना और बड़ा करना आंतरिक शक्ति का विषय है।

बच्चा सबसे पहले जो शब्द बोलता है, वह है मा, मॉम। परिवार में महिला जननी होती है, वह संतान पैदा करती है, वह शिक्षिका होती है, देखभाल करने वाली होती है, विश्वासपात्र होती है, वह अन्नदत्ता होती है, अन्नपूर्णा होती है, साथ ही वह परिवार के सभी सदस्यों की भावनाओं को व्यक्त करने का माध्यम होती है, वह एक परामर्शदाता होती है जो सभी को संबोधित करती है और परिवार में आखिरकार कार्रवाई को उचित ठहराने का प्रयास करती है। वह परिवार को उस धागे की तरह बांधती है जो मोतियों को बांधता है, अदृश्य होते हुए भी हार को सुंदर बना देता है। महिलाओं के बिना परिवार नमक के बिना भोजन के समान है। एक बार एक साक्षात्कारकर्ता ने एक उम्मीदवार से पूछा कि क्या आप एक प्रबंधक, क्लर्क, हाउसकीपिंग स्टाफ, देखभाल करने वाले की भूमिका निभाने के लिए तैयार हैं। आशंकित उम्मीदवार ने हां कहा। साक्षात्कारकर्ता ने कहा कि आपको दिन में २४ घंटे काम करना होगा, कोई छुट्टियां नहीं, छुट्टियों में अतिरिक्त काम और यह सब बिना किसी वेतन के। उम्मीदवार जोर से हंसा उसे प्यार, सम्मान, विश्वास, देखभाल दीजिए, उसे खिलते हुए देखिए, उसे खुश देखिए और अपने ऊपर प्रकृति के आशीर्वाद का अनुभव कीजिए।

दीदी के छाँव तले

सतयुग के इस स्तंभ में हम पाठकों के उन अनुभवों को लाते हैं जिन्हें उन्होंने दीदी से सुना, जीवन में उतारा, उनका जीवन सुधरा और अब वो चाहते हैं इनके अनुभव सुनकर अन्य लोग भी अपना जीवन सुधारें :-

शब्दों का असर

मेरे पति ने हमारी शादी के दौरान नारायण व्यवहार किया था और मुझे बहुत भला बुरा कहा था क्योंकि जितना वो चाहते थे, उतना मेरे पापा दे नहीं सके थे, मैंने उन्हें उस समय क्रोध की अवस्था में कहा था कि आप बहुत पछताओगे, आपको अपने इस कर्म का भुगतान अवश्य करना होगा। परिणाम- मेरे शब्दों ने अपना असर दिखा दिया, आज उनकी हर तरह से स्तिथि नारायण हेल्प है। मैं अपने नकारात्मक शब्दों के लिए क्षमा चाहती हूँ दीदी।

सद्भावना की प्रार्थना से स्वयं को सुधारा, सासु माँ से सम्बन्ध सुधरे

मैं अपनी सासु माँ के साथ पिछले दस वर्षों से रह रही हूँ, उनके साथ मेरे संबंध नारायण-नारायण थे। मैं कोशिश करती थी कि संबंध अच्छे हो जाएँ, परन्तु हर थोड़े दिनों में हमारी खिट-पिट हो जाया करती थी, आपकी सद्भावना की प्रार्थना के दौरान मुझे आत्म चिंतन करने पर एहसास हुआ कि मैं ऊपरी तौर से उनके साथ रहती थी, मन ही मन बड़बड़ाना, अपशब्द बोलना, उनके बारे में अच्छा ना सोचना यह सब करती थी। हमारे झगड़े के चलते मेरे पति से भी सम्बन्ध नारायण- नारायण हो गए थे। दीदी, आपको कोटि कोटि धन्यवाद है, आपसे जुड़ कर मैंने अपने विचार वाणी व्यवहार को सुधारा, अब मैं उनके लिए जो भी करती हूँ, पूरे दिल से करती हूँ। परिणाम यह है कि आज हम दोनों के संबंध इतने अच्छे हो गए हैं, हम दोनों एक दूसरों की बहुत केयर करते है। इसका पूरा श्रेय राज दीदी, आपको जाता है, आपको कोटि कोटि धन्यवाद।

चरित्र में सुधार

कन्फेशन - मैं अपने पड़ोसी से चिट- चैट करती थी । उस समय तो बहुत अच्छा लगता था परन्तु उस क्षणिक सुख के बदले मुझे बहुत बड़ी कीमत अदा करनी पड़ रही है। हमारे घर में समृद्धि पूरी तरह रुकी हुई है। गाड़ी, ड्राइवर सब चला गया, हर महीने के १५ दिन बाद लोगों से पैसा माँगना पड़ता है। बहुत उधार चढ़ता जा रहा है। मुझे क्षमा दिलवाएं, मैंने अब चिट-चैट करना पूरी तरह से बंद कर दिया है।

नकारात्मक विचार न रखें

कन्फेशन - जब संयुक्त परिवार में रहते थे तब मेरे मन में हमेशा यह भाव रहता था कि सारा काम मैं ही करती हूँ जेठानी जी कुछ नहीं करती हैं। परिणाम- अब घर का सारा काम मुझे अपने हाथ से ही करना पड़ता है, कोई हेल्पर भी नहीं टिकता है जिसके कारण मुझे बहुत शारीरिक कष्ट उठाना पड़ता है । अपने विचारों के लिए क्षमा चाहती हूँ।

शब्दों की ताक़त

कल मेरे पति की तबियत खराब हो गयी थी। तब वह हॉस्पिटल जा कर एडमिट होने को कह रहे थे, परन्तु जैसा कि आप कहतीं हैं, जो चाहिए वो बोलिये, मैंने लगातार यह बोलना जारी रखा कि घर में ही ठीक हो जायेंगे, घर में ही ठीक हो जायेंगे, और मेरे शब्द फलीभूत हो गए, मेरे पति की तबियत धीरे धीरे घर में ही ठीक हो गयी, हमें अस्पताल जाने की ज़रूरत नहीं पड़ी। हमें सकारात्मकता से भरने के लिए आपको धन्यवाद है दीदी।

विचार वाणी का कन्फेशन

जब भी मैं अपने सास ससुर के घर जातीं हूँ, तब उनके फ्रिज में खाने के सामान की अव्यवस्था को देख कर बड़बड़ाती जाती हूँ और सफाई भी करती जाती हूँ, उन्हें अपने शब्दों और व्यवहार से आहत करती हूँ। पितृ पक्ष की प्रार्थना के दौरान मुझे यह एहसास हुआ कि यह मैं गलत कर रही हूँ, इसलिए आज कन्फेशन कर रही हूँ, और आगे से ऐसा कभी नहीं करुँगी।

राज दीदी -आपको यह ज्ञात होना चाहिए, कि यह उनके घर की व्यवस्था है, उनको जैसा ठीक लगेगा वो करेंगे, आप दो तीन दिन के लिए उनके घर गए हैं, उसमें उनको आदर- सम्मान, सुख दीजिये। जो समय मिला है उसे अपना सौभाग्य मान कर चलिए। याद रखिये, यह निश्चित है कि जो कुछ भी आप कर रहे हैं, दे रहे हैं, वह आपके पास लौट कर आएगा।

रंजीता मालपानी को ५६ विभिन्न स्त्रोत्रों से गुड नेम, फेम के साथ ५६ करोड़ रुपये वार्षिक आमदनी का नारायण आशीर्वाद!

वर्षा वैटी को अपने नए व्यवसाय सारथी एंटरप्रेजेज गुड नेम, फेम के साथ ५६ करोड़ रुपये वार्षिक आमदनी का नारायण आशीर्वाद को निरंतर फलने फूलने का नारायण आशीर्वाद !

प्रेरणादायक वृत्तांत

डॉक्टर आनंदी गोपाल जोशी

डॉक्टर आनंदी गोपाल जोशी का जन्म ३१ मार्च १८६५ को पुणे में हुआ था। वह महाराष्ट्र के ब्राह्मण परिवार से ताल्लुक रखती थीं। महज ९ साल की उम्र में उनकी शादी २५ साल के गोपाल राव जोशी से हो गई थी। १४ साल की उम्र में आनंदी मां बन चुकी थीं। हालांकि १० दिनों के भीतर ही उनके नवजात बच्चे की मौत हो गई। इस दुःख ने आनंदी को अंदर से झकझोर दिया। आनंदी ने डॉक्टर बनने की ठान ली ताकि उनकी तरह किसी और मां को इस तक़लीफ़ का सामना ना करना पड़े। आनंदी गोपाल जोशी डॉक्टर बनने के लिए पढ़ाई करने लगी और उसमें उनके पति ने उनका भरपूर साथ दिया। हालांकि समाज में उनकी आलोचना भी होती थी।

आलोचनाओं की परवाह किए बगैर उन्होंने अपनी पढ़ाई को जारी रखा। शुरुआत में उनके पति ने उनका दाखिला मिशनरी स्कूल में कराया जिसके बाद आगे की पढ़ाई के लिए वे कोलकाता चली गईं। आनंदी गोपाल जोशी ने संस्कृत और अंग्रेजी में पढ़ना और बोलना सीखा। उनके पति लगातार मेडिकल की पढ़ाई के लिए उन्हें प्रोत्साहित करते रहे। हालांकि उनके लिए अमेरिका के मेडिकल कॉलेज में एडमिशन आसान नहीं था, उनके समक्ष धर्म परिवर्तन की शर्त रखी गई थी। लेकिन वह तैयार नहीं हुईं। वह हमेशा चाहते थी कि ब्राह्मण महिला के रूप में ही वह डॉक्टर की उपाधि लें और उन्होंने ऐसा कर के भी दिखाया।

मेडिकल की पढ़ाई करने के लिए शादीशुदा होने के बावजूद उन्होंने अमेरिका जाने का निर्णय लिया। आनंदी ने कोलकाता से जहाज पकड़ा और न्यूयॉर्क जा पहुंची। न्यूयॉर्क जाने के लिए जहाज पर चढ़ने से पहले उन्होंने सेरामपुर कॉलेज हॉल में एक सार्वजनिक सभा को भी संबोधित किया था, जिसमें उन्होंने चिकित्सा में विदेशी शिक्षा हासिल करने के अपने फैसले को सही ठहराया था। उन्होंने पेंसिल्वेनिया के महिला मेडिकल कॉलेज में चिकित्सा कार्यक्रम में एडिमशन लिया। १८८६ में उन्होंने महज २१ साल की उम्र में एमडी की डिग्री हासिल की। एमडी की डिग्री हासिल कर डॉक्टर बनने वाली वह भारत की पहली महिला डॉक्टर बनीं। डॉक्टर बनने के बाद जब आनंदी भारत लौटीं तो उनका भव्य स्वागत हुआ।

सबसे पहले उनकी नियुक्ति कोल्हापुर रियासत के अल्बर्ट एडवर्ड अस्पताल में महिला वार्ड प्रभारी के रूप में हुई थी। डॉक्टर बनने के बाद उन्होंने समाज की सेवा के लिए कई सपने संजोए थे। हालांकि किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। भारत की पहली महिला डॉक्टर बनने का कीर्तिमान स्थापित करने वाली आनंदीबाई गोपाल टीबी की बीमारी का शिकार हो गईं। दूसरों का इलाज करने से पहले ही वह स्वर्ग सिधार गईं। लगातार बीमार रहने की वजह से उनका निधन २६ फरवरी १८८७ को महज २२ साल की उम्र में हो गया। उनकी मृत्यु पर पूरे भारत में शोक की

लहर व्याप्त हो गयी थी । आनंदीबाई ना सिर्फ़ भारत के लिए बल्कि पूरी दुनिया की महिला समाज के लिए एक मिसाल बनीं। उनकी जीवनी पर कैरोलिन वेलस ने १८८८ में एक बायोग्राफी भी लिखी थी। इसी बायोग्राफी के आधार पर एक सीरियल भी बनाया गया था जिसे दूरदर्शन पर आनंदी गोपाल के नाम से प्रसारित किया गया था। ३१ मार्च २०१८ को गूगल की ओर से उनके १५३वीं जयंती पर गूगल डूडल बना कर सम्मानित किया गया था।

कल्पना चावला

अंतरिक्ष में जाने वाली पहली भारतीय महिला कल्पना चावला ने एक ऐसा सपना पूरा किया जिसकी भारत में कई लोगों को आकांक्षा थी लेकिन केवल उन्होंने ही इसे पूरा किया। बचपन से ही उनके मन में विभिन्न महत्वाकांक्षाएं थीं और विमान में उनकी गहरी रुचि थी, जिसके कारण उन्होंने एरोनॉटिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की। कल्पना ने धैर्य और कड़ी मेहनत का उदाहरण देते हुए दिखाया कि समर्पण किसी भी बाधा को दूर कर सकता है। उनके शिक्षकों ने विज्ञान के प्रति उनके जुनून को देखा, और इसमें शामिल चुनौतियों को पहचानने के बावज़ूद, उनके मन में अंतरिक्ष में जाने की गहरी इच्छा थी। अपने पिता से प्रोत्साहित होकर उन्होंने अपनी आकांक्षाओं को साकार करने के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त की थी। कल्पना चावला भारत के हरियाणा के एक छोटे से शहर करनाल से थीं। उन्होंने एक स्थानीय स्कूल में पढ़ाई शुरू की जहाँ एक मेहनती और शैक्षणिक रूप से कुशल छात्रा बन श्रेष्ठ प्रदर्शन किया। अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने एरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में विशेषज्ञता के साथ पंजाब विश्वविद्यालय में ग्रेजुएशन की पढ़ाई की। वहां वे अपने बैच में एकमात्र महिला छात्र थीं।

ग्रेजुएशन स्तर की पढ़ाई के बाद वह आगे की पढ़ाई के लिए विदेश चली गईं और पोस्ट ग्रेजुएशन के लिए अमेरिका के टेक्सास यूनिवर्सिटी में दाखिला लिया। इसके बाद उन्होंने कोलोराडो यूनिवर्सिटी में डॉक्टरेट की पढ़ाई की और पीएचडी की डिग्री प्राप्त की। उनका करियर तब आगे बढ़ा जब वह नासा के एम्स रिसर्च सेंटर में शामिल हुईं, जिससे अंतरिक्ष खोज में उनकी उल्लेखनीय यात्रा की शुरुआत हुई।

१९९४ में कल्पना ने नासा के साथ एक अंतरिक्ष यात्री के रूप में अपना पहला अंतरिक्ष मिशन शुरू किया, जिसके एक साल बाद वह अंतरिक्ष दल की सदस्य बन गईं। चुनौतियों का सामना करने के बावजूद वो अंतरिक्ष की खोज में नई ऊंचाइयों तक पहुंचने के अपने सपने में दृढ़ रहीं। १९ नवंबर, १९९४ को, उन्होंने छह सदस्यीय दल के एक भाग के रूप में स्पेस शटल कोलंबिया फ्लाइट एसटीएस-८७ में भाग लिया। अंतरिक्ष में लगभग ३७५ घंटे

बिताए और ६.५ मिलियन मील से अधिक की दूरी तय की।

दुःखद रूप से पृथ्वी पर उनकी वापसी यात्रा के दौरान, अंतरिक्ष यान विघटित हो गया, जिसमें कल्पना चावला सहित चालक दल के सभी सात सदस्यों की जान चली गई, जिससे उनका शानदार करियर समय से पहले ही समाप्त हो गया। असामयिक अंत के बावजूद, कल्पना की विरासत साहस, दृढ़ संकल्प और किसी के सपनों की खोज के प्रतीक के रूप में जीवित है। कल्पना चावला के निधन से भारतीयों को बहुत दुःख हुआ। लेकिन कल्पना चावला महिलाओं के लिए, खासकर भारतीय महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई हैं। वह उन युवाओं के लिए एक आदर्श बन गईं जो अपने जीवन में महानता हासिल करने की इच्छा रखते हैं। उनका जीवन हमें खुद को सीमित न रखने और जीवन को अपने सपनों को साकार करने के अवसर के रूप में देखने की सीख देता है। कल्पना ने जीवन को एक चुनौती और एक अवसर दोनों के रूप में अपनाया, जिसने उन्हें उल्लेखनीय ऊंचाइयों तक पहुंचने में सक्षम बनाया। उनका जीवन हमें दृढ़ संकल्प और साहस के साथ अपनी आकांक्षाओं को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

कल्पना चावला के जीवन ने सिखाया कि आप जो करते हैं उसके प्रति दृढ़ संकल्प से कैसे उपलब्धियों की ओर बढ़ा जा सकता है। उन्होंने चुनौतियों पर काबू पाया और विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महिलाओं के लिए एक रास्ता तय किया। उनकी कहानी अनगिनत व्यक्तियों, विशेषकर युवाओं को कठिनाइयों की परवाह किए बिना अपनी आकांक्षाओं को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती हैं।

धापू देवी

कभी स्कूल नहीं गईं धापू देवी, लेकिन जीवन की पाठशाला की वह एक श्रेष्ठ विद्यार्थी रहीं। १५ साल पहले वह घूंघट छोड़ बाहर निकलीं तो यह हालात की मजबूरी थी। पति के काम में हाथ बंटाना था। छह बेटियों और एक बेटे को अच्छी शिक्षा दिलाने और जीवनयापन के लिए काम करना ही था। भले ही लोगों ने उनका उपहास उड़ाया, लेकिन उन्होंने सोलर कुकर और वाटर कूलर बनाने वाली इकाई में काम किया। पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया तो पता चला कि हम महिलाएं किसी से कम नहीं, पर जिंदगी कभी सीधी रेखा में कहां चलती है।

वर्ष २०१३ में पति का देहांत हो गया और धापू देवी के जीवन से जैसे धूप चली गई। रिश्तेदारों ने कहा कि कम

से कम एक साल तक घर में ही रहें, लेकिन धापू अधिक समय तक इन बाधाओं को नहीं स्वीकार कर सकीं। अपने पुराने सहकर्मियों की प्रेरणा से महज एक माह बाद ही वह काम पर लौट गईं। इसी बीच उनकी एक साल की बेटी जब बहुत बीमार हुई और किसी तरह का इलाज काम नहीं आ रहा था तो आखिर में उसे बचाने में काम आया घर में रखा अमृत चूरन। यह एक पौष्टिक चूरन था जिसे धापू खुद बनाती थीं। जीवन जब अंधियारे में था तो इसी घटना ने उनके मन में उम्मीद की किरण जगा दी।

धापू को चूरन बनाने का आइडिया यहीं से आया। उन्होंने सोचा कि राजस्थान में जहां एनीमिया और कुपोषण की समस्या बहुत अधिक है, क्यों न वह इसी दिशा में अपना काम शुरू करें। बच्चों की अकेले परवरिश करते हुए और इस नए काम के बीच तालमेल बिठाते हुए उनका संघर्ष रंग लाने लगा। आज उनके साथ १५ समर्पित महिलाएं काम कर रही हैं। उनका उत्पाद सुपर ५ के नाम से लोकप्रिय है। यह उत्पाद राजस्थान के करीब ४० गांवों में पहुंच चुका है। २० हजार बच्चों और ४००० महिलाओं को कुपोषण से लड़ने में मदद कर रहा है उनके द्वारा बनाया गया चूरन। अगले कुछ सालों में वह दूसरे राज्यों में भी अपने चूरन को पहुंचाना चाहती हैं। पढ़-लिख न पाने वाली धापू देवी के बच्चे आज न केवल अच्छी शिक्षा पा चुके हैं, बल्कि वित्तीय रूप से भी आत्मनिर्भर हैं। बेटा मैकेनिकल इंजीनियर है तो बेटी नर्स। छोटी बेटी कोडिंग सीख रही है।

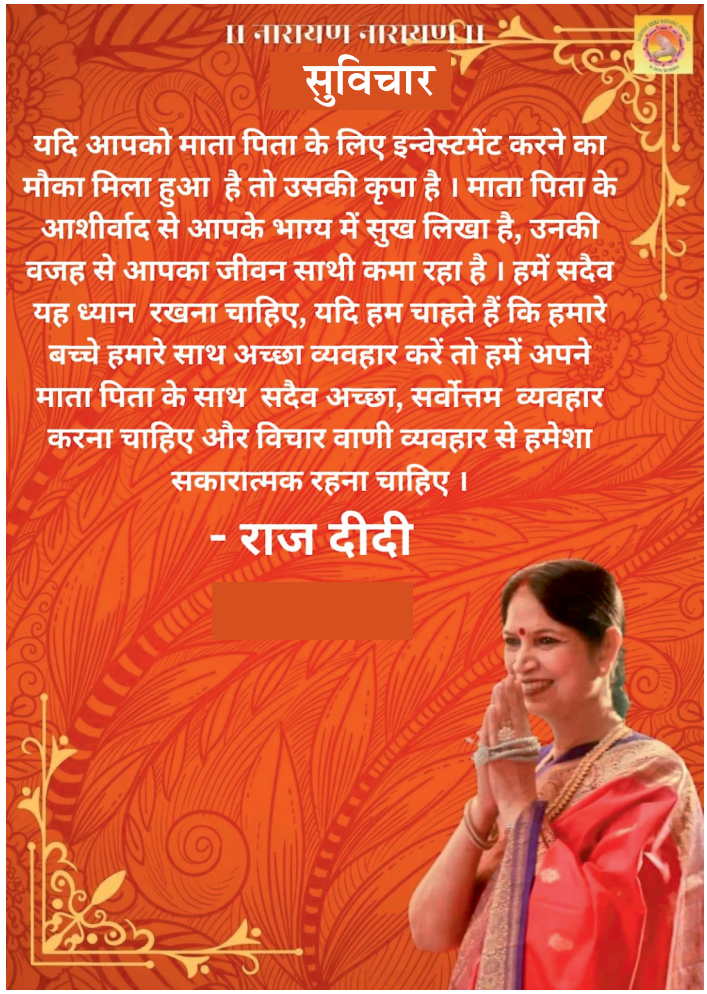

॥ 卐 ॥

Pavaan Vani

Dear Narayan Premiyo,
llNarayan Narayan ll

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,विश्वास रजत नग पग तल में,
पीयूष स्रोत सी बहा करो,जीवन के सुंदर समतल में।।

Woman, you are only faith, faith prevalent in sky, earth and Paatal(below earth) ,

Flow like a source of nectar, on the beautiful plains of life. These lines of poet, Shri Jai Shankar Prasad ji depict the role of women in the creation of this universe in very beautiful words.

Every moment of life is a symbol of love, compassion, tolerance and power of a women. Woman is a mother, a nurturer, Lakshmi, progress and success. There is no such work in the world that a woman cannot do. In every field, women are playing their role in a very brilliant and lively way. All that is needed is to recognize the capabilities within oneself and use them appropriately when needed.

Rita Kaushik, who comes from the Musahar community, had never thought that she would become the first woman in her family to receive formal education and would be able to show a new path on her own to a society living on the margins and cursed to suffer poverty and hunger. Today, she is working for the education and awareness of the Musahar community through her organization. Her organization has a reach to 112 village panchayats. She is working with government and private organizations not only in the country but also with organizations working at the international level. She is lighting the fire of education in the lives of more than 25 thousand children. Her story is 23 years old. Rita has grown up facing struggle and humiliation. The desire of a girl to study, who was the guardian of her younger siblings at home, came out when she got tired of waiting for her brother outside school every day. Then she requested the teacher at the same school to sit on the last bench and give her a slate. The matter was settled, and she also started studying. She topped every exam in the school. Although she had to face a lot of discrimination due to being a Dalit, but she did not give up. Suddenly, the Dalit father, a rickshaw puller, started worrying about the marriage of his daughter and one day, Rita had to reluctantly agree to child marriage, but the very next day after the bidai she returned to her maternal home. With a passion for studying in her heart, she wanted to do something in life. She shared her desire with her father. Her father had to bow down to her indomitable wish, but after some time, the lack of money stood like a wall. Rita faced this challenge very well. She made herself capable enough to get a small job so that she could continue her studies with the money she got. She did BSc and took the reins of her life in her own hands. Later, she remarried. Today, along with her life partner, she is doing many things for the development of the Dalit society and her community. While making them aware of their rights, she is telling them that real light comes in life only when the light of education is lit. Because of Rita, not only are the problems of her community reducing, but the girls of that society are also able to muster courage to raise their voices against evils like child marriage.

We have to recognize our inner strengths and use them when needed to prove the significance of our lives.

Rest is all good,

R. Modi

CO-EDITOR
Deepti Shukla 09869076902

EDITORIAL TEAM
Vidya Shastry 09821327562
Mona Rauka 09821502064

Main Office
Narayan Bhawan
Topiwala Compound, station road,
Goregaon (West), Mumbai.

Editorial Office
Shreyas Bunglow No 70/74 Near Mangal Murti Hospital, Gorai link Road, Borivali (W) Mumbai -92.

Regional Office

AHMEDABAD	JAIWINI SHAH	9712945552
AKOLA	SHOBHA AGRAWAL	9423102461
AKOLA	RIYA AGARWAL	9075322783
AMRAVATI	TARULATA AGRAWAL	9422855590
AURANGABAD	MADHURI DHANUKA	7040666999
BANGALORE	KANISHKA PODDAR	7045724921
BANGALORE	SHUBHANGI AGRAWAL	9341402211
BASTI	POONAM GADIA	9839582411
BIHAR	POONAM DUDHANI	9431160611
BHILWADA	REKHA CHOUDHARY	8947036241
BHOPAL	RENU GATTANI	9826377979
CHENNAI	NIRMALA CHOUDHARY	9380111170
DELHI (NOIDA)	TARUN CHANDAK	9560338327
DELHI(NOIDA)	MEGHA GUPTA	9968696600
DELHI (W)	RENU VIJ	9899277422
DHULIA	RENU BHATWAL	878571680
GONDIYA	POOJA AGRAWAL	9326811588
GAUHATI	SARLA LAHOTI	9435042637
HYDERABAD	SNEHALATA KEDIA	9247819681
INDORE	DHANSHREE SHIRALKAR	9324799502
JALANA	RAJNI AGRAWAL	8888882666
JALGAON	KALA AGARWAL	9325038277
JAIPUR	PREETI SHARMA	9461046537
JAIPUR	SUNITA SHARMA	8949357310
JHUNJHNU	PUSHPA DEVI TIBEREWAL	9694966254
ICHAKARANJI	JAY PRAKASH GOENKA	9422043578
KOLHAPUR	RADHIKA KUMTHEKAR	9518980632
KOLKATTA	SWETA KEDIA	9831543533
KANPUR	NEELAM AGARWAL	9956359597
LATUR	JYOTI BHUTADA	9657656991
MALEGAON	REKHA GARODIA	9595659042
MALEGAON	AARTI CHOUDHARY	9673519641
MORBI	KALPANA CHOUARDIA	8469927279
NAGPUR	SUDHA AGRAWAL	9373101818
NANDED	CHANDA KABRA	9422415436
NAWALGARH	MAMTA SINGRODIA	9460844144
NASIK	SUNITA AGARWAL	9892344435
PUNE	ABHA CHOUDHARY	9373161261
PATNA	ARBIND KUMAR	9422126725
PURULIYA	MRIDU RATHI	9434012619
PARATWADA	RAKHI MANISH AGRAWAL	9763263911
RAIPUR	ADITI AGRAWAL	7898588999
RANCHI	ANAND CHOUDHARY	9431115477
SURAT	RANJANA AGARWAL	9328199171
Sangli	Hema Mantri	9403571677
SIKAR (RAJASTHAN)	SUSHMA AGARWAL	9320066700
SHRI GANGANAGAR	MADHU TRIVEDI	9468881560
SATARA	NEELAM KDAM	9923557133
SHOLAPUR	SUVARNA BALDEVA	9561414443
SILIGURI	AKANKSHA MUNDHRA	9564025556
TATA NAGAR	UMA ARAWAL	9642556770
ROURKELA	UMA ARAWAL	9776890000
UDAIPUR	GUNWATI GOYAL	9223563020
HUBLI	PALLAVI MALANI	9901382572
VARANASI	ANITA BHALOTIA	9918388543
VIJAYWADA	KIRAN JHAWAR	9703933740
VARDHA	RUPA SINGHANIA	9833538222
VISHAKAPATTNAM	MANJU GUPTA	9848936660

INTERNATIONAL CENTRE NAME AND NUMBER

AUSTRALIA	RANJANA MODI	61470045681
DUBAI	VIMLA PODDAR	+971528371106
KATHMANDU	RICHA KEDIA	+977985-1132261
SINGAPORE	POOJA GUPTA	+6591454445
SHRJAH-UAE	SHILPA MANJARE	+971501752655
BANGKOK	GAYATRI AGARWAL	+66952479920
VIRATNAGAR	MANJU AGARWAL	+977980-2792005
VIRATNAGAR	VANDANA GOYAL	+977984-2377821

Editorial

Dear readers,

ll Narayan Narayand ll

Recently, I heard an interview of Pepsi CEO Indra Nooyi in which she said, 'My mother has taught me that wherever you are, play your role in the best possible way but always remember that your best role is that of a woman which you have to play in the best possible way'. I have always remembered this teaching of my mother. Whatever my role may be outside the house, but as soon as I enter the house, I become a wife, daughter-in-law and a mother and play my role. Result - my performance outside the house has always been excellent. Whenever I have broken down outside the house, my family has taken care of me. I thank the Almighty who has given me a support system, a family to play so many roles as a woman. I am so blessed.

When I heard this, I felt that among all the creations of God, the most challenging role is that of women. Team Satyug decided that in this issue we will talk about the various roles of women.

My dear friends, may you continue to play your role in the best possible manner, with these best wishes,

Yours own,
Sandhya Gupta

To get
important message and information from
NRSP Please Register yourself on 08369501979
Please Save this no. in your contact list so that you can get all official broadcast from NRSP

we are on net

narayanreikisatsangparivar@narayanreiki

Publisher **Narayan Reiki Satsang Parivar,**
Printer - **Shrirang Printers Pvt. Ltd.,** Mumbai.
Call : 022-67847777

Call of Satyug

When that supreme power created the universe, perhaps he also knew that among his creations, woman is the only creation who can develop this human race by playing many roles and can take it forward on the path of progress, development and success**. God blessed her with motherly love so that she can give birth to children, impart affection and care, so that she can fill every atom with love**. Almighty gave her endurance so that she can face even the gravest situations with patience, gave her unlimited ability to perform tasks so that she can do even the most impossible tasks, gave her beauty so that she can flaunt herself, gave her knowledge, gave her intelligence so that she can play her role judiciously.

When this creation of God was born and performed her tasks, this creation in the form of woman turned out to be much better than the expectations of that supreme power, so God established her as **Shakti Swaroopa.** In our scriptures, women are considered a symbol of spirituality. Women have played their role in every field very well and have automatically earned a place for themselves**. From ancient times till today, there is no such field of life where women have not been able to play their role well when given an opportunity.**

To be honest, women are the foundation of society, and they have played an important role in various fields. Their participation and contribution have increased with time, and today they are making their mark in every field. You can judge the condition of a country by looking at the condition of its women.

This is a famous quote on women by Jawaharlal Nehru.

The condition of women reflects the social, economic and mental condition of a nation.

Women enjoyed rights and equality in Chinese and Indian civilization but in the medieval period when foreigners invaded India, women were treated badly and unequally. Social evils like dowry, Sati system, child marriage and female feticide were widely prevalent in this era. The spread of education and self-awareness among women has promoted their progress over time. Today's women are empowered. Also, women are progressing and achieving success in every field. True women's freedom can be achieved only when people change their restrictive attitude and mindset towards women. A family cannot be imagined without a woman. A woman gives birth to children and nurtures them. She becomes capable of moving forward by maintaining her existence in the society and this society touches the steps of advancement, progress and success.

The role of women is very important in the field of education. An educated woman not only empowers her family but also contributes to the progress of society and the country. Earlier women were deprived of education, but today women are working as teachers, professors, scientists, and heads of various educational institutions. **The increasing participation of women in education is an important step towards the development of society.**

At present, women are also actively contributing to the economic sector. Women are actively participating in entrepreneurship, trade, banking, finance, and various economic activities. The rise of women entrepreneurs is not only encouraging economic growth, but they are also providing new employment opportunities. Many successful women today are CEOs and directors of large corporate institutions, which shows that women are no less than men in any field.

The role of women in politics is also important. Today women are making important contributions to the development of society and the country by becoming Prime Ministers, Chief Ministers, MPs, MLAs and heads of various political parties. In a democratic country like India, it is necessary for women to get proper representation in power. **With 33% reservation in Panchayats, women have also established their hold in lower-level politics, which is a symbol of social empowerment.**

Women are also leading in the health and medical sector. As doctors, nurses, medical researchers, and healthcare providers, women are playing a vital role in the health and well-being of society. In emergency situations like pandemics, women health workers have served on the frontline, which reflects their dedication and spirit of service.

Women also play a vital role in social service and philanthropic work. Women are leading in areas like girl education, women empowerment, poverty alleviation, and environmental protection. Many social organizations and NGOs are being run under women leadership, which are working for the weaker sections of the society. This contribution of women is helpful in taking the society towards justice and equality.

Women have also left a deep mark in the field of culture and art. The contribution of women in music, dance, painting, literature and cinema is unmatched. In Indian history, many famous women artists, writers and musicians have enriched the cultural heritage of the country. They are working to spread change and awareness in the society through their art. Women are also proving their worth in the field of science and technology. Women scientists and engineers are making important inventions and discoveries in the field of space research, medical research, and IT. The role of women in the Indian Space Research Organization (ISRO) and other major scientific institutions is commendable. The role of women in various fields of society is not only important, but the progress of society is incomplete without them. Women are making their own identity in the society based on the strength of their struggle, hard work and determination. It is important that they get equal opportunities and support, so that they can move forward in all their fields and actively participate in the building of the society. **Women empowerment is beneficial not only for women but for the entire society.**

॥ 卐 ॥

Wisdom Box (Glimpses of Satsang)

In this column, we share information with the readers about some important techniques by Didi, through questions and answers, which solve the complex problems of life in very simple ways. Here are some such questions and answers –

How can a person control his anger and jealousy? Because at that moment we say some things about which we ourselves regret later. But how to control that?

Raj Didi: The first thing is that you should know that whatever I am saying out of jealousy, anger, jokingly, these things are going to come back to me. You are not simply giving them rather you are depositing them in your account. When you become so aware, then the words which should not be uttered, those words will not come out of your mouth.

Second awareness, now when you watch my videos etc. then you will understand how much we focus on words.

During your conversation you will understand and definitely you will also become aware towards words.

Check, we often regret after speaking negative. After 2 months, 3 months we feel that we should not have said that, but it came out of my mouth at that time. We know some things and we react to these things, whether you are at workplace or at home, certain situations you know cause your reaction, so you have to get out of them. You always react and always regret after that, regret that I should not have said that. This does not happen once; the cycle keeps going back and forth. Before sleeping at night, you have to visualize that situation that suppose you want your table to be systematic in office when you take interviews, do podcasts, all your things should be organized, and you direct the person you are working with. Stuff has to be kept here, stuff has to be kept there, despite that stuff is kept here and there and then you get disturbed that even after I told you so many times you did not understand. Before going to sleep at night, you have to close your eyes and see the situation where the things were placed from here to there and what I said, I should not have said that. From the next time, you have to give instructions to your brain that even if such a situation comes again, I will remain calm. You spoke 5-7 times, you saw the situation and instructed yourself that if I see this scene again in the office, I

will remain calm, "I will respond, I will not react". When you have given this instruction to yourself and the next time this situation comes again, you will stop while speaking. The words will come up to your throat but will not come out of your mouth. Even if you speak to me in a dream, the wrong word will not come out of our mouth, we do not have awareness in dreams.

"You have visualized, that is why you use such positive words."

Raj Didi said, I will not talk about visualization, but I have understood the power of words, say it the importance of words, power or capability. Many times, we have to use certain words to explain the audience because the general public is unable to understand. So many times, we say the words 'Narayan-Narayan' before and after that, pronounce Narayan Narayan. To explain something to someone, if a negative word comes out of our mouth, then that negative word may not bear fruit, so we say Narayan Narayan, pronounce God's name so that that word becomes nullified.

Do you think we should believe in horoscopes and what is the impact of our karmas on our horoscope please guide ?

Raj Didi said that believing or not believing in horoscope is your personal choice, it depends on your faith but how your actions. Impact your lives, can be explained in simple language so that you can easily understand.

Raj Didi further elaborated that in this Universe, there are drums with names of each and every person, the drums are open from the bottom. Numerous invisible powers travel in the Universe. You must have also felt their powers many of times. It so happens that sometimes while walking you almost slipped but felt someone held you up. While climbing down the stairs, almost fell down but felt some one protected you and you are safe. These invisible powers make their presence felt many times, is it right or not ?

What is the main job of these invisible powers ?

Raj Didi said their main job is that when we do good deeds, they fill grains in our account and when we do bad karma they put pebbles in our account. This is their main job; this process is very fast. You do good deeds by means of your thoughts, words and behavior, immediately they put grains into your drum, you do wrong

deeds, immediately pebbles are transferred in your drums.

What is the definition of good deeds ?

Raj Didi answered what is the definition of good deeds ?

In simple words the karma which gives joy, peace, inspiration, makes one feel good- all this falls in category of good karmas. In return of good karma these invisible powers put grains in your drum. If you do negative karma which hurts someone then these powers put pebbles in your drum. When you do good karma, you get good results as a package deal, you are blessed with good health, wealth, peace, prosperity, success, achievement, name, fame money, joy, bliss, enthusiasm, love, respect, faith, care, all your work is done smoothly. You attract the things which you desire easily. If you do negative karma, you get pebbles in your drum and package deal of sorrow, illness, poverty, pain, hurt, problems etc.

Didi, you are very humble and have a lot of patience. Chanting so many malas every day, then knowing people's problems, giving them solutions, you work very hard. I am meeting you right now, I can feel that your energy is very calm, full of kindness. How did you develop this energy and how can people develop this energy ?

Raj Didi: - You are talking about patience, I have less patience than what you see, I don't have that much patience at home. In the environment in which we grew up in childhood, we did not have any other option. We were not adamant, who would we be adamant with, on what basis...?? In simple words, we used to be submissive. My father was a very simple man, and my brothers were very strict. My brothers did not like us speaking loudly, standing outside, talking to boys. Being elder brother is fine, on the basis of respect, but we were afraid of the eyes of our younger brother too. He is 5 years younger than me. Even today we do not have the courage to speak loudly in front of our elder brother. We do not have this courage even today. We grew up in that environment from the beginning, so many things got into our nature from that. There was no mother, my grandmother brought me up, but our aunt was our supporter. My aunt has a very big impact on my life. Aunt always used to tell me that when you go to your in-laws' house, do not speak loudly, tomorrow no one

should say that since mother was not there, no one gave you any values. They should feel that grandmother and aunt have given very good values. Aunt repeatedly explained with love and never spoke loudly. She said, if you remain calm in your in-laws house and your behavior is good, everyone will accept you. No one in your parent's house is so strong that you can raise your voice on any matter. In this way, the learning we got from them, our friend circle, all the people around us were very good. We can only say that it is the grace of Narayan that we got very good surroundings from the beginning, that is why good things started coming.

People ask me how do you prepare such a big team...?? How do you deal with people...?? People deal with me; I don't have to handle anything. If you ask anyone, I really don't have to handle anything. If you ask me whether this was your vision, to reach such heights ? I had no vision. Things happened automatically in life. I will definitely say that I always used my time properly, always uttered words after thinking. We never did talk too much, passing time on the phone, watching TV, gossiping with others. Today we have become completely involved in satsang. Getting up, sitting, eating, drinking, all this is satsang, but we are talking about those days when we were not so involved in satsang. Even then, it was not our nature to gossip with someone or watch TV. Now, when we are studying the scriptures, the first thing we are realizing is that you can win over the other person with politeness, not with anger. No matter how many great people you see, you will find all of them to be polite. Take Gandhiji for example, all of them are polite.

Narayan Shastra says that when you are polite, you attract prosperity in your life. Prosperity does not mean only wealth, four things are counted in it – your body, your mind, your wealth, your relations. When you are polite, your body is healthy because your energy belongs to you, if you shout, where will your energy go ? Politeness gives you many things – your mind is peaceful, wealth is abundant. Today, the more polite you are, the better things you will attract. You told me that you saw my videos, so here I am not wearing a mask, this is part of my daily routine.

॥ 卐 ॥

Youth Desk

Woman is to be worshipped, woman is praiseworthy! - this is what our scriptures and our culture say.

Woman introduces us to the world as a mother who gives birth. She creates and nourishes us in her womb, nourishes us by feeding us her milk, teaches us to walk by holding our finger, increases our knowledge by becoming our teacher, and throughout our life she constantly wishes for our well-being and long life. As a sister, she is your first and inseparable friend, as a wife, she is versatile and fills your life with joy. As a grandmother and maternal grandmother, she becomes an ocean of incessant love.

In Indian culture, under the ashram system, both men and women fulfill their duties well. The man goes out to earn money for his living and the woman takes care of the house and the children.

Time changed, eras changed and due to the invaders, the condition of women became pitiable.

Woman, a symbol of power, tolerated everything but her inner self kept getting hurt. The patience of the woman who had been suffering for centuries started to fail and today she has become rebellious.

Nowadays, due to education and economic independence, she has started acting as she pleases. Although this does not apply to all women, but nowadays many such examples have started coming to the fore.

The basic nature of a woman is patience and decency. Her spirit of service, her humility, keeping the house together, lovingly becoming the form of Annapurna by cooking nutritious food, becoming a good housewife and making a house a home, is what makes her a complete woman.

Finally, we will say that if every woman plays all her roles with full honesty and sincerity, then every house will become a heaven in itself.

Hindi Doha

Woman, you are worshipped, be worthy of worship.

Do not get spoiled by imitating others, listen to your heart.

Children's Desk

The existence of Lord Shiva, the creator of the universe, is considered incomplete without Shakti. Shiv exits, Shakti too exists with him. The universe is run smoothly only by maintaining harmony between man and nature. Shivling, the symbol of Shiva Shakti, is a symbol of this. Lord Shiva is said to be the symbol of man while Goddess Shakti is said to be the symbol of nature. Lord Shiva tells that if there is no harmony between man and nature, then it is impossible for any work of the world to be completed properly.

This, issue of Satyug we are elaborating on the role of Women.

It is proven through the ages that Man is incomplete without Woman. **Women play an important role in every aspect of society, from family and work to politics. They are caregivers, mothers, leaders, entrepreneurs, and activists**. They are the pillars of the family and community.

There is beautiful story in the purana about Ardhanarishwar. There was a Shiv bhakt(follower) named Brunghi . She wanted to do pradakshina of Lord Shiva. Lord Shiva said you will have to include Shakti also in the pradakshina. Brunghi did not agree to it. She tried to come between Shiv and Shakti. Shiv placed Shakti in his lap, Brunghi tried to take a form of a bee and do the pradakshina. Then Shiv included Shakti in himself and became Ardhanarishwar, to prove man is incomplete without his women.

Women play multifaceted roles. They are the daughters, the sister, the mother, the wife, the partner, the confidante, the mentor, the nurse, the caregivers.

Women are very resilient, physically they may lack the power but mental strength in women is something to reckon with. Giving birth nurturing and raising is a matter of inner strength.

The first word a child utters is **ma,** mom. The woman in the family is the janani, she procreates, she is a teacher, a care giver, a confidante, she is the Anna Datta, the Annapoorna, at the same time she is a let go junction for all the family members emotions, She is counsellor addressing all and trying to justify the action after all in the family. She binds the family like the thread that binds the pearls, unseen but making the necklace beautiful. A family without a woman is like food without salt.

An interviewer once asked a candidate are you ready to perform the role of a manager, the clerk, the housekeeping staff, the caregiver. Apprehensive the candidate said yes. The interviewer added you will have to work for 24hrs a day, no holidays, extra work on holidays and all this without any salary. The candidate laughed aloud are you kidding. The interviewer said ask your mother.

Respect the woman. Give her love, respect, faith, care , see her blossom, see her Happy and experience Nature's blessings upon you.

Under The Guidance of Rajdidi

In this column of Satyug we bring those experiences of readers which they heard from Didi, implemented in their life, their life improved and now they want that other people also improve their life by listening to their experiences: -

Effect of words

My husband behaved like Narayan during our marriage and said a lot of bad things to me because my father could not give me as much as he wanted, I told him in a state of anger at that time that you will regret a lot, you will definitely have to pay for this deed of yours. Result- My words showed their effect, today his condition is Narayan help in every way. I apologize for my negative words Didi.

I improved myself with the prayer for goodwill, improved my relationship with mother-in-law.

I have been living with my mother-in-law for the last ten years, my relationship with her was very good. I tried to improve the relationship, but every few days we used to quarrel. During your prayer for goodwill, I realized on self-reflection that I used to live with her superficially, I used to grumble in my mind, use abusive words, not think well of her. Due to our quarrels, my relationship with my husband also became very bad. Didi, I thank you a lot, by joining you I improved my thoughts, speech and behavior, now whatever I do for her, I do it with all my heart. The result is that today our relationship has become so good, we both care for each other a lot. The entire credit for this goes to you Raj Didi, many thanks to you.

Improvement in character

Confession - I used to chit-chat with my neighbor. It felt very good at that time, but I have to pay a very big price for that momentary pleasure. Prosperity has completely stopped in our house. The car, the driver, everything is gone, we have to ask people for money after 15 days of every month. The debt is increasing a lot. Please forgive me, I have completely stopped chit-chatting now.

Do not keep negative thoughts

Confession- When we lived in a joint family, I always had this feeling in my mind that I do all the work, and my sister-in-law does nothing. Result- Now I have to do all the household work by myself, no helper is there due to which I have to bear a lot of physical pain. I apologize for my thoughts.

Power of words

Yesterday my husband's health deteriorated. Then he was asking to go to the hospital and get admitted, but as you say, say what you want, I kept on saying that he will get well at home, he will get well at home, and my words came true, my husband's health gradually got better at home, we did not need to go to the hospital. Thank you Didi for filling us with positivity.

Confession of thoughts and words

Whenever I go to my in-laws' house, I keep grumbling and cleaning the food in their fridge, I hurt them with my words and behavior. During the prayers of Pitru Paksha, I realized that I am doing wrong, so today I am confessing, and I will never do this again.

Raj Didi - You should know that this is the arrangement of their house, they will do whatever they feel is right, you have gone to their house for two-three days, give them respect, honor and happiness in that. Consider the time you have got as your good fortune. Remember, it is certain that whatever you are doing, giving, it will come back to you.

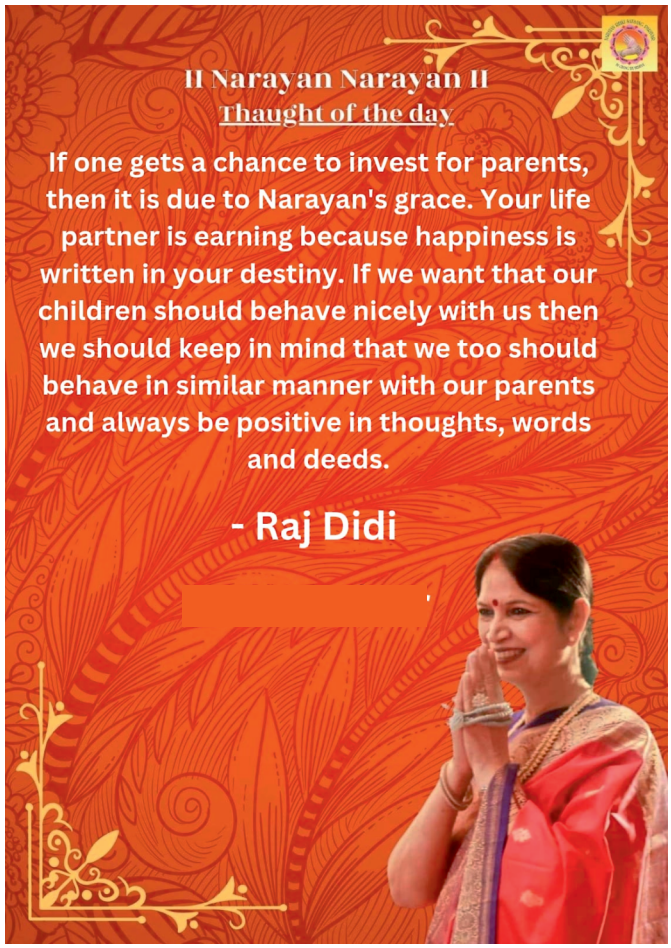

Inspirational Memoirs

Doctor Anandi Gopal Joshi

Doctor Anandi Gopal Joshi was born on 31 March 1865 in Pune. She belonged to a Brahmin family of Maharashtra. At the age of just 9, she was married to 25-year-old Gopal Rao Joshi. Anandi became a mother at the age of 14. However, her newborn child died within 10 days. This sorrow shook Anandi from within. Anandi decided to become a doctor so that no other mother would have to face this pain like her. Anandi Gopal Joshi started studying to become a doctor and her husband supported her wholeheartedly in this. However, she was also criticized in the society.

Without caring about the criticism, she continued her studies. Initially, her husband got her admitted to a missionary school, after which she went to Kolkata for further studies. Anandi Gopal Joshi learned to read and speak in Sanskrit and English. Her husband constantly encouraged her to study medicine. However, it was not easy for her to get admission in a medical college in America, a condition of conversion to Christianity was put before her. But she did not agree. She always wanted to get the title of doctor as a Brahmin woman, and she proved it by doing so.

Despite being married, she decided to go to America to study medicine. Anandi caught a ship from Kolkata and reached New York. Before boarding the ship to New York, she also addressed a public meeting in Seram pore College Hall, in which she justified her decision to get foreign education in medicine. She took admission in the medical program at the Women's Medical College of Pennsylvania. In 1886, she obtained an MD degree at the age of just 21. She became the first woman doctor in India to become a doctor by obtaining an MD degree. When Anandi returned to India after becoming a doctor, she was given a grand welcome.

She was first appointed as the in-charge of the women's ward in the Albert Edward Hospital of Kolhapur state. After becoming a doctor, she had many dreams to serve the society. However, fate had something else in store for her. Anand bai Gopal, who set the

record of becoming India's first female doctor, fell victim to TB. She died before she could treat others. Due to continuous illness, she died on 26 February 1887 at the age of just 22. A wave of mourning spread across India on her death. Anandi bai became an example not only for India but also for the women of the whole world. Caroline Wells also wrote a biography on her in 1888. A serial was also made on the basis of this biography, which was broadcast on Door Darshan in the name of Anandi Gopal. On 31 March 2018, she was honored by Google by making a Google Doodle on her 153rd birth anniversary.

Kalpana Chawla

The first Indian woman to go to space, Kalpana Chawla fulfilled a dream that many in India aspired to but only she could. Since childhood, she had various ambitions and a deep interest in aircraft, which led her to study aeronautical engineering. Kalpana set an example of patience and hard work, showing that dedication can overcome any obstacle. Her teachers saw her passion for science, and despite recognizing the challenges involved, she had a deep desire to go to space. Encouraged by her father, she pursued higher education to realize her aspirations. Kalpana Chawla was from Karnal, a small town in Haryana, India. She began her studies in a local school where she excelled as a hardworking and academically adept student. After completing her schooling, she pursued graduation at Punjab University, specializing in aeronautical engineering. There she was the only female student in her batch.

After graduation, she went abroad for further studies and joined the University of Texas, USA for post-graduation. She then pursued doctoral studies at the University of Colorado and obtained a PhD degree. Her career progressed when she joined NASA's Ames Research Center, marking the beginning of her remarkable journey in space exploration.

In 1994, Kalpana began her first space mission as an astronaut with NASA, a year after which she became a member of the space crew. Despite facing challenges, she remained

steadfast in her dream of reaching new heights in space exploration. On November 19, 1994, she participated in Space Shuttle Columbia Flight STS-87 as a part of the six-member crew. Spent about 375 hours in space and covered a distance of more than 6.5 million miles.

Tragically, during their return journey to Earth, the spacecraft disintegrated, taking the lives of all seven crew members, including Kalpana Chawla, bringing her illustrious career to a premature end. Despite the untimely end, Kalpana's legacy lives on as a symbol of courage, determination and the pursuit of one's dreams. Kalpana Chawla's demise left Indians deeply saddened. But Kalpana Chawla remains a source of inspiration for women, especially Indian women. She became a role model for youngsters who aspire to achieve greatness in their lives. Her life teaches us not to limit ourselves and look at life as an opportunity to realize our dreams. Kalpana embraced life as both a challenge and an opportunity, which enabled her to reach remarkable heights. Her life encourages us to achieve our aspirations with determination and courage.

Kalpana Chawla's life taught how determination towards what you want do can lead to achievements. She overcame challenges and set a path for women in science and technology. Her story inspires countless individuals, especially the youth, to achieve their aspirations regardless of the difficulties.

Dhapu Devi

Dhapu Devi never went to school, but she was an excellent student at the school of life. When she discarded the veil, Indian women have on their faces 15 years ago, it was due to the compulsion of circumstances. She had to help her husband in his work. She had to work to provide a good education to her six daughters and one son and to earn a living. Even though people ridiculed her, she worked in a unit that made solar cookers and water coolers. When she worked shoulder to shoulder with men, she realized that we women are no less than anyone, but life never moves in a straight line. In 2013, her husband died, and it was as if

the sunshine went out of Dhapu Devi's life. Relatives told her to stay at home for at least a year, but Dhapu could not accept these obstacles for long. With the inspiration of her old colleagues, she returned to work after just a month. Meanwhile, when her one-year-old daughter fell very ill and no treatment was working, the Amrit Churan kept in the house finally helped save her. This was a nutritious Churan that Dhapu used to make herself. When life was in darkness, this incident lit a ray of hope in her mind. Dhapu got the idea of making churan from here. She thought that in Rajasthan, where the problem of anemia and malnutrition is very high, why not start her work in this direction. While raising children alone and balancing this new work, her struggle started paying off. Today 15 dedicated women are working with her. Her product is popular by the name of Super 5. This product has reached about 40 villages of Rajasthan. The churan made by her is helping 20 thousand children and 4000 women to fight malnutrition. In the next few years, she wants to deliver her churan to other states as well. The children of Dhapu Devi, who could not study, have not only got a good education today, but are also financially self-reliant. The son is a mechanical engineer, and the daughter is a nurse. The younger daughter is learning coding.

Narayan blessings to Ranjita Malpani with Narayan Shakti for earning jackpot amounts in multiples of Rs.56 crore from multiple sources of income with good name and fame.

Narayan blessings to Varsha Vaity Progressing, flourishing, prospering in her new business in name of Saarthi Enterprises with good name and fame and earning jackpot amount in multiples of Rs.56 crore.

GOLDEN SIX

1) Prayer -Thank you Narayan for always being with us because of which today is the best day of our life filled with abundance of love, respect, faith care, appreciation, good news and jackpots . Thank you Narayan, for blessing us with infinite peace and energy. Narayan, Thank you for blessing us with abundant wealth which we utilize. We are lucky and blessed. With your blessings, Narayan, every person, place, thing, situation, circumstances, environment, wealth, time, transport, horoscope and everything associated with us is favourable to us. We are lucky and blessed .Thank you Narayan for granting us the boon of lifelong good health because of which we are absolutely healthy. Thank you Narayan with your blessings we are peaceful and joyous, we are positive in thoughts, words and deeds and we are successful in all spheres of life. Narayan dhanyawad.

2) Energize Vaults - Visualize a rectangular drawer in which you store your money. Visualize Rs 2000 notes stacked in a row, followed by Rs 500/- , Rs100/- , Rs 50/-, Rs20/- Rs10/- and a silver bowl with various denomination of coins. Now address the locker 'You are lucky, the wealth kept in you prospers day by day.' Request the notes "Whenever you go to somebody fulfill their requirements, bring prosperity to them and come back to me in multiples." Now say the Narayan mantra, "I love you, I like you, I respect you, Narayan Bless you" and chant Ram Ram 56

3) Shanti Kalash Meditation – Visualize a Shanti Kalash (Peace Pot) above your crown chakra. Chant the mantra" Thank You Narayan, with your blessing I am filled with infinite peace, infinite peace, infinite peace. Repeat this mantra 14 times."

4) Value Addition - Add value to cash and kind (even food items) you give to others by saying Narayan Narayan or by saying the Narayan mantra.

5) Energize Dining Table/ Office table - Visualize the dining table/ office table and energize it with Shanti symbol, LRFC Carpet, Cho Ku Rei and Lucky symbol. Give the message that all that is kept on the table turns into Sanjeevini.

6) Sun Rays Meditation - Visualize that the sun rays entering your house is bringing happiness, peace, prosperity, growth, joy, bliss, enthusiasm and health sanjeevini. Also visualize your wishes materializing. This process has to be visualized for 5 minutes.

Finest Pure Veg Hotels & Resorts

The Byke

A HOTEL RETREAT

EAT GREEN • STAY EVERGREEN

Our Hotels : Matheran | Goa | Manali | Jaipur | Thane | Puri | UPCOMING BORIVALI (Mumbai)

THE BYKE HOSPITALITY LIMITED

Shree Shakambhari Corporate Park,Plot No.156-158,

Chakravati Ashok Complex, J.B.Nagar, Andheri (East), Mumbai - 400099.

T.: +91 22 67079666 | E.: sales@thebyke.com | W.: www.thebyke.com